ख्यालों में देखा

वो आए मेरी महफिल में रब की मेहरबानी।
महफ़िल हो गई रौशन नाची मैं भी दीवानी।।

साकी ने उठाया था जब जाम निग़ाहों का।
गुस्ताख़ मुहब्बत से हो ही गई शैतानी।।

क्या खूब थी उनकी नजरों में वो हया कातिल।
परदे में निगाहें थी पर उनमें भी हैरानी।।

मैंने भी किया सजदा यूं नजरें झुका अपनी।
मुझको तो लगा जैसे सूरत है ये पहचानी।।

ख्यालों में देखा मैंने उनको यूं तो अक्सर ही।
काटी न गई वो बहकी रात थी तूलानी।।

प्रीती श्रीवास्तव

कल्याणपुर, कानपुर।